Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

वर्णवाद, सामंतवाद, एवं दलित की स्थिति पर प्रकाश डालता मधुकर सिंह का साहित्य

ज्योति गोविन्द राव[1]

हिन्दी साहित्य के विकास यात्रा को आगे बढ़ाने में विभिन्न साहित्यकारों, व्यंगकारों, निबंधकारों, आलोचकों का अपना अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिन्होंने समाज के बदलते परिवेश को करीब से महसूस किया और उस समय– काल को ध्यान मे रखते हुए अपनी लेखनी का चलयी इससे उन्होंने समाज के विचारों का पुनर्जागरण किया। ये साहित्यकार विभिन्न प्रान्तों एवं विभिन्न परिस्थितियों का सामना करते हुए समाज के सामने अपने विचारों को रखा। इसी तरह की परिस्थितियों में मधुकर सिंह का आगमन हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में हुआ। इनका जन्म 2 फ़रवरी सन 193 को बंगाल के मिदनापुर में हुआ और लगभग दस वर्ष की आयु में ये भोजपुर जिले के स्व–ग्राम धरहरा आ गये। माँ द्वारा सुने बाउल गीत का इनके बालमन पर गहरा प्रभाव पड़ा। माँ की प्रेरणा से ही इन्होंने 'रुक जा बदरा' खण्ड काव्य लिख डाला।

वैसे भी आरा शहर कथाकारों की भूमिका रही है। शिवपूजन सहाय से लेकर विजयमोहन सिंह, मिथिलेश्वर, अनंत कुमार सिंह, राकेश कुमार सिंह, सुभाष शर्मा और बाणभट्ट की कथा जन्म– भूमि भी यही रही है। सामजिक– राजनितिक व्यवस्था के प्रति एक गहरा असंतोष और रोष शुरू से लेकर आज तक की इनकी रचनाओं में दिखाई पड़ता है।

सामंतवाद, वर्णवाद, पूंजीवाद, जनविरोधी, प्रशासन, सरकार और भेदभाव वाले सामाजिक– धार्मिक संस्कारों के खिलाफ एक तीव्र विरोध के आग्रह के साथ इन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों को रचा है। भूस्वामियों का जो वर्चस्व है उसे बरकरार रखने में पुरी ब्राह्मणवादी सामाजिक– धार्मिक व्यवस्था सहयोगी दिखती है। पूंजीवाद भी सामंती संरचना को ध्वस्त करने के बजाय उससे गठजोड़ किये हुए है और वही गठजोड़ लोकसभा, विधानसभा और गैर सरकारी संस्थाओं पर काबिज है।

इस व्यवस्था पर प्रहार करती मधुकर सिंह की प्रमुख रचनायें हैं– 'सोनभद्र की राधा', 'सबसे बड़ा छल', 'सीताराम नमस्कार', 'जंगली सूअर', 'मेरे गाँव के लोग', 'समकाल', 'कथा कहो कुंती माई', 'आगिन देवी', 'अर्जुन–जिन्दा है' सहित सत्रह उपन्यास है। जिसमे अधिकांश उपन्यासों की कथाभूमि सामन्तवादी और वर्णवादी व्यवस्था की क्रूरताओं और अमानवीयताओं के खिलाफ प्रतिवाद और विद्रोहवाद से ही सम्बंधित है। इस व्यवस्था के

[1] शोधछात्रा, हिन्दी विभाग, दीन दयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय

बारे मं मधुकर सिंह कहते हैं– "मुझे लगता है कि पहले से चली आ रही वर्ण व्यवस्था आज और ज्यादा गहराई है। आजादी के लिये संघर्ष के भागीदार बड़े लोग ही सत्ता में आकार यथास्थिति के पोषक– संरक्षक है। ये लोग भीतर से काफी सजग है कि भूमि की केन्द्रीयता और स्वामित्व की रक्षा किस प्रकार की जा सकती है। विकास पदाधिकारिओं ने उन्ही का साथ दिया है जो गांवों के बड़े जोतदार, कुलक और शासक वर्ग के लोग रहे हैं। स्वाभाविक है कि गाँव विभिन्न जन– संगठनों तले गोलबंद होने लगे और प्रतिरोध और संघर्ष मुक्ति– मार्ग की ओर बढ़ चले। भाई का जख्म, लहू पुकारे आदमी, दुश्मन, उसका सपना, कवि भुनेसर मास्टर, हरिजन सेवक, कीर्तन आदि कहानियाँ इन्ही सारी स्थितियों की उपज है। दूसरी ओर पहला पाठ, सत्ताधरी जैसी कहानियां मेरे इर्द– गिर्द चल रही लड़ाइयों की गाथाएँ हैं। बिहार खासकर मध्य बिहार और छोटा नागपुर क्षेत्रों के गावों में जो नयी राजनीतिक चेतना और जनसंघर्ष कि मशालें जाली हैं के अपने कई विरोधाभासों के बावजूद कोइ नयी दिशा और बदलाव के लिये असीम छटपटाहट और तड़प का ही संकेत है जिनके बीच होने के कारण मेरी बेचैनी का आभास भी मेरी ये कहानियां हैं।"२

मधुकर सिंह के कथा साहित्य में सामंती वर्णवाद भेदभाव और शोषण के प्रसंग बार बार आते हैं और घटनाओं, पात्रों, स्थितियों कि आवाजाही भी एक उपन्यास या कहानी से दूसरे उपन्यास या कहानी में दिखती है। यह इसलिए भी है कि यही उनका प्रामाणिक अनुभव स्थान है।

दलित विमर्श के लिहाज से भी मधुकर सिंह का कथा–साहित्य बेहद महत्वपूर्ण है। हिन्दी कथा– साहित्य में दलितवादियों विमर्श के शुरू होने से दो ढाई दशक पहले मदुकर सिंह ने दलितों की मुक्ति के प्रश्न को कथा साहित्य का केन्द्रीय प्रश्न बनाया। स्त्री की मुक्ति का प्रश्न यहाँ दलित मुक्ति से अभिन्न रूप से संबद्ध है। आज के दलित कथा साहित्य के विपरीत इनकी कहानियों और उपन्यास में दलितों कि सामाजिक मुक्ति का सवाल जमीन के लिये आंदोलन से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ नजर आता है।

'मेरे गावों के लोग' इसी पर केंद्रित है। दलित जातिओं से आने वाले वाली नौकरशाह, मंत्री उनकी कहानियों और उपन्यासों के नायक नहीं हैं और न ही दलित मध्यवर्ग की जिंदगी उनके केंद्र में है। इसके बावजूद समाज में जो वर्चस्व में है वे वादे बेचैन दिखते हैं कि शूद्रों का राज आ गया है। इनकी कहानियों के दलित चरित्र जी बुनियादी तौर पर खेत मजदूर और भूमिहीन किसान है या उनके आंदोलनों के नेता है, वे पुरे समाज और सामंती व्यवस्था के साथ राज काज का चेहरा बदलने के लिये संघर्ष करते हैं। इस पर मधुकर सिंह कहते हैं कि– **" मैंने लिखा भी है कि साहित्य समाज को नहीं बदल सकता। साहित्य प्रेरणा देते हैं। समाज को नहीं बदल सकते। समाज को राजनीती या राजनीतिकरण से बदल सकते हैं।**[3] भोजपुर का आन्दोलन जिन उतार– चढावों से गुजर है, उसके प्रति जो एक आम धरना है, मधुकर सिंह कि कहानियाँ उसे पकडने की कोशिश करती है। नए रचनाकारों को

प्रोत्साहित करते हुए वे कहते हैं– **"भाई तुम जहां हो, जिसके साथ हो, तुम जिनके लिये हो, उसी के लिखो पर अपने आस पास को कभी मत भूलो। आस पास ही हमारा सही लेखन लेखन क्षेत्र है।"**[4]

आज मधुकर सिंह अस्सी वर्ष के हो गये हैं। लकवा ग्रसित हैं और कम सुनाई देता है फिर भी लेखन में सक्रीय हैं। अपनी जीवनी लिख रहें हैं। इनकी यह सक्रीयते साहित्य के प्रति इनके लगाव और समर्पण को दर्शाता है।

अब तक प्रकाशित दस कहानी संग्रहों और उन्पन्यासों में जमीन, आजादी, मुक्ति और बराबरी के लिये संघर्षरत दलित, वंचित और मेहनतकश गरीन लोगों के प्रति मधुकर सिंह की जो पक्षधरता है वह उन्हें हिन्दी साहित्यकारों में विशिष्ट बनाती है।

संदर्भ सूची

१ जनपथ त्रैमासिक, अक्तूबार २०१२ अंक

संपादक– अनंत कुमार सिंह

पृष्ठ संख्या –८

२ दस परिनिधि कहानियां

किताब घर प्रकाशन
मधुकर सिंह के स्वयं के विचार

पृष्ठ संख्या– ६

३ जनपथ त्रैमासिक, अक्टूबर ०२ अंक

संपादक– अनंत कुमार सिंह
सुधीर सुमन को दिए गये साक्षात्कार में मधुकर सिंह के विचार

पृष्ठ संख्या– ५५

४ जनपथ त्रैमासिक, अक्टूबर २१ अंक

संपादक– अनंत कुमार सिंह
सुधीर सुमन को दिए गये साक्षात्कार में मधुकर सिंह के विचार

पृष्ठ संख्या– ५६